17 अप्रैल 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 2 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## अर्हं पाठशाला का विशेष कार्यक्रम संपन्न

### # पाठशाला पढ़ना Cool है !

**जयपुर (राज.) :** यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 अप्रैल को अर्हं पाठशाला का दिशा-निर्देश कार्यक्रम रखा गया, जिसके अन्तर्गत विभिन्न विद्वानों ने पाठशाला के विषय में अपने भाव अभिव्यक्त किये एवं पाठशाला के संचालकों द्वारा कुछ दिशा-निर्देश दिये गये।

इस अवसर पर पाठशाला के सह-निर्देशक पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने पाठशाला को मन की शांति देने वाला बताया; पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल ने पाठशाला को दु:ख दूर करने व सुखी होने का मार्ग बताया; पाठशाला के समन्वयक **( co-ordinator )** आकाशजी शास्त्री द्वारा अर्हं पाठशाला का परिचय तथा इंचार्ज जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा कोर्स की जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त मराठी भाषा में संयमजी देशमाने, कन्नड भाषा में आकाशजी हलाज, गुजराती भाषा में पलजी त्रिवेदी, तमिल भाषा में जगदीशन शास्त्री तथा अंग्रेजी भाषा में आयुषजी जैन द्वारा अर्हं पाठशाला का परिचय दिया गया। सभी छात्रों को निर्देश अनेकान्तजी शास्त्री द्वारा दिया गया।

प्रसिद्ध तार्किक विद्वान एवं सहस्राधिक विद्वानों के पितामह डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि अर्हं पाठशाला को जातिवाद, धर्मवाद से दूर रखकर प्रत्येक जीव के दु:खों को दूर करने व सुखी होने के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया है। पाठशाला के निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने बताया कि माता-पिता अपने बच्चों में अच्छे संस्कार का बीजारोपण करने हेतु एवं उनके सुनहरे भविष्य के लिये अर्हं पाठशाला में कभी भी व कहीं भी प्रवेश दिला सकते हैं। यह तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में एक सराहनीय कदम है। पाठशाला के निर्देशक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने पाठशाला की पूरी टीम (कु. प्रतीति पाटील, अर्पित शास्त्री, आकाश शास्त्री, जिनेन्द्र शास्त्री, जिनकुमार शास्त्री, सुदीप शास्त्री, अनेकान्त शास्त्री, विनीत शास्त्री, आकाश शास्त्री हलाज) की प्रशंसा की।

कार्यक्रम का संचालन पाठशाला के कार्यकारी अधिकारी **(Executive )** अर्पितजी शास्त्री ने किया।

## पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

**गुना (म.प्र.) :** यहाँ कुण्डलपुर नगरी, भार्गव कृषि फार्म, सोनी कॉलोनी में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ, श्री दिगम्बर जैन वीतराग विज्ञान भवन न्यास एवं मुमुक्षु मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित श्री 1008 महावीर दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शुक्रवार, दिनांक 5 अप्रैल से बुधवार 10 अप्रैल, 2019 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना एवं पण्डित अशोकजी मांगुलकर आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त 8 अप्रैल को रात्रि में मोटिवेशनल स्पीकर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा '**विकल्पों का मायाजाल**' विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ।

महोत्सव ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना के निर्देशन में एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के मंच संचालनत्व में संपन्न हुआ।

बालक वर्धमान के माता-पिता बनने का सौभाग्य सौ. इन्द्रादेवी-विनयकुमारजी जैन (एड.) गुना को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री संतोष-रीता भारिल्ल गुना, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री संजीव-आशा जैन गुना एवं महायज्ञनायक-नायिका श्री मनीष-निधि जैन गुना थे। महोत्सव का ध्वजारोहण सौ. केशरबाई धर्मपत्नी नेमीचंदजी जैन परिवार गुना ने, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री शिखरचंदजी परिवार 'शीतल ट्रांसपोर्ट' गुना, मंच उद्घाटन डॉ. एम.के. जैन आलोक जैन (नेमीचंदजी गोंदवाला परिवार) गुना ने, यागमण्डल विधान का उद्घाटन जैन जागृति महिला मण्डल गुना ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप के जिनालय का उद्घाटन श्री अशोककुमारजी जैन परिवार 'सुभाष ट्रांसपोर्ट' गुना ने किया। सर्वप्रथम आहारदान श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा ने किया।

विधिनायक भगवान महावीरस्वामी के भेंट व विराजमानकर्ता श्री

**(शेष पृष्ठ 3 पर...)**

सम्पादकीय –

## ऐसे क्या पाप किये ?

27

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

### पुरुषार्थसिद्ध्युपाय और आचार्य अमृतचन्द्र

लोकेषणा से दूर रहनेवाले वनवासी निरीह-नि:स्पृह, साधु-सन्तों का स्वभाव ही कुछ ऐसा होता है कि वे केवल आत्मा-परमात्मा का ही चिन्तन-मनन एवं उसी की चर्चा-वार्ता करते हैं, अन्य लौकिक वार्ता से एवं व्यक्तिगत बातों से उन्हें कोई प्रयोजन नहीं होता। यदि लिखने-पढ़ने का विकल्प आता है तो केवल वीतराग वाणी को लिखने-पढ़ने का ही आता है। अत: उनसे स्वयं के जीवन-परिचय के विषय में कुछ कहने-सुनने या लिखने की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

वस्तुत: तो आचार्य अमृतचन्द्र का कर्तृत्व ही उनका परिचय है और सौभाग्य से आज का स्वाध्यायी समाज उनके कर्तृत्व से अपरिचित नहीं रहा। एक साधु का इससे अधिक और परिचय हो भी क्या सकता है ? न उनका कोई गाँव होता है, न ठाँव, न कोई कुटुम्ब होता है, न परिवार। उनके व्यक्तित्व का निर्माण उनकी तीव्रतम आध्यात्मिक रुचि, निर्मल वीतराग परिणति एवं जगतजनों के उद्धार की वात्सल्यमयी पावन भावना से ही होता है, जो उनके साहित्य में पग-पग पर प्रस्फुटित हुई है।

जब उनमें मोह-मग्न विश्व के प्रति वात्सल्यभाव जागृत होता है, तो वे करुणा से विगलित हो कहने लगते हैं –

**''त्यजतु जगदिदानीं मोहमाजन्मलीढं।**
**रसयतु रसिकानां रोचनं ज्ञानमुद्यत्।।२२।।''**[१]

हे जगत के जीवो ! अनादिकालीन मोह-मग्नता को छोड़ो और रसिकजनों को रुचिकर उदीयमान ज्ञान का आस्वादन करो। तथा –

**''मज्जन्तु निर्भरममी सममेव लोका:,**
**आलोकमुच्छलति शान्तरसे समस्ता।**
**आप्लाव्य विभ्रम तिरस्करणीं भरेण–**
**प्रोन्मग्न एव भगवानवबोधसिन्धु:।।३३।।**[१]

यह ज्ञानस्वरूप भगवान आत्मा भ्रमरूप चादर को समूलरूप से हटाकर सर्वांग से प्रगट हुआ है, अत: अब समस्त लोक उस शान्तरस में पूरी तरह निमग्न हो जाओ, उसी में बारम्बार गोते लगाओ।

और भी देखिए, वे समयसार कलश २३ में आत्महित में प्रवृत्त होने की प्रेरणा कितने कोमल शब्दों में दे रहे हैं –

**अयि कथमपि मृत्वा तत्त्व कौतूहली सन्–**
**अनुभवभवमूर्ते पार्श्ववर्ती मुहूर्तम्.....।।**

अरे भाई ! तू किसी भी तरह मरकर भी अर्थात् महाकष्ट उठाना पड़े तो भी, तत्त्व का कौतूहली हो जा और केवल दो घड़ी के लिए ही सही इस शरीर का भी पड़ौसी बनकर आत्मा का अनुभव कर ! तेरे सब दु:ख दूर हो जायेंगे।''

मानो, उनके मनके विकल्प रुकते नहीं है, तो वे अपने ही मन को समझाने लगते हैं –

**अलमलमिति जल्पैदुर्विकल्पैरनकल्पै–**
**रयमिह परमार्थश्चेत्यतां नित्य मेक:।।**[२]

बहुत कथन से और बहुत दुर्विकल्पों से बस होओ, बस होओ और एकमात्र परमार्थ का ही निरन्तर अनुभव करो, क्योंकि समयसार के सिवाय दूसरा कुछ भी सारभूत नहीं है।

आचार्य कुन्दकुन्द के कंचन को कुन्दन बनानेवाले एकमात्र आचार्य अमृतचन्द्र ही हैं, जिन्होंने एक हजार वर्ष बाद उनके ग्रन्थों पर रहस्योद्घाटक बेजोड़ टीकायें लिखकर उनकी गरिमा को जगत के सामने रखा।

अमृतचन्द्र ही कुन्दकुन्द के सशक्त टीकाकार के रूप में विख्यात हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र की कृतियों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि परम आध्यात्मिक संत, गहन तात्त्विक चिन्तक, रससिद्ध कवि, तत्त्वज्ञानी एवं सफल टीकाकार थे। आत्मरस में निमग्न रहनेवाले आचार्य अमृतचन्द्र की सभी गद्य-पद्य रचनाएँ अध्यात्मरस से सराबोर हैं।

पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रन्थ इन्हीं आचार्य अमृतचंद्र का है।

१. समयसार कलश - २२

१. समयसार कलश - २३ २. समयसार कलश - २४४

यह ग्रन्थ श्रावकाचार होते हुए भी अध्यात्मरस से सराबोर है। कहा भी है -

**''अमृतचन्द्र मुनीन्द्र कृत ग्रन्थ श्रावकाचार,**
**अध्यातमरूपी महा आर्याछन्द जु सार।**
**पुरुषारथ की सिद्धि को जामें परम उपाय,**
**जाहि सुनत भव भ्रम मिटै आतम तत्त्व लखाय।''[१]**

इसप्रकार मुनीन्द्र, आचार्य, सूरि जैसी गौरवशाली उपाधियों से उनके महान व्यक्तित्व का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। **(क्रमशः)**

१. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय पृष्ठ - २०५ (टीकाकार की अन्तिम प्रशस्ति)

## तत्त्वार्थसूत्र महामण्डल विधान संपन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ बापूनगर स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय परिसर में विशाल पाण्डाल बनाकर श्री एस.एल.गंगवाल एवं विपिनजी गंगवाल परिवार द्वारा दिनांक 31 मार्च से 5 अप्रैल तक श्री तत्त्वार्थसूत्र महामण्डल विधान का आयोजन बहुत धूमधाम से किया गया।

इस अवसर पर श्री ज्ञानचंदजी झांझरी, श्री महेशजी चांदवाड आदि समाज के अनेक विशिष्ट गणमान्य अतिथियों सहित लगभग 200-250 साधर्मियों ने विधान में बैठकर धर्मलाभ लिया।

समस्त कार्यक्रम का निर्देशन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने किया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

इस प्रसंग पर प्रतिदिन सायंकाल डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों के अतिरिक्त श्री एस.पी. भारिल्ल एवं श्री हर्षवर्धन जैन द्वारा विशेष सेमिनार लिया गया। साथ ही श्री हरेशजी द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं एक दिन डॉ. विमलकुमारजी जैन के प्रवचन का लाभ मिला।

संपूर्ण आयोजन श्री विपिनजी पुत्र श्री एस.एल. गंगवाल परिवार की विशेष भावना के फलस्वरूप किया गया।

**(पृष्ठ 1 का शेष...)**

प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ की ओर से डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर थे।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। प्रतिष्ठा मण्डप पर पीछे **LED** के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम में सैंकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची।

महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।●


## 53वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

**रविवार, दिनांक 19 मई 2019 से बुधवार, 5 जून 2019 तक**

**विशेष आकर्षण**

**इस शिविर में मुख्यरूप से पाठशालाओं में अध्यापन कराने वाले अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा, जिससे वे अपने नगरों में बालकों को वैज्ञानिक पद्धति से पढा सकेंगे।**

**साथ ही -**

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचनों का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन, कक्षाओं का भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

**आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।**

**कार्यक्रम स्थल :- दयालजी आश्रम, मजूरा गेट, सूरत (गुज.)**

**संपर्क सूत्र -**

**ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458;**
**Email - ptstjaipur@yahoo.com**

**आवास प्रमुख -** धर्मेन्द्र शास्त्री (9724038436), अरुण शास्त्री (9377451008), सम्यक् जैन (9033325581)

**असुविधा से बचने के लिये आवास फार्म भरकर हमें सूचित करें। आवास सुनिश्चित करने की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल है। वाट्सएप से भी आवास सुनिश्चित करवा सकते हैं।**


## पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ आदर्श नगर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर मुल्तान में दिनांक 31 मार्च को भव्य पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन श्री मनोहरलालजी सिंघवी परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर डॉ. श्रीयांसजी सिंघई, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी सेठी आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ और डॉ. ज्योति सेठी के निर्देशन में पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर व पण्डित सोमिलजी शास्त्री दलपतपुर द्वारा संपन्न हुये। **- पंकज जैन**

**पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड के अन्तर्गत -**

## श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ

व्यक्तित्व विकास में आध्यात्मिक शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय आध्यात्मिक शिक्षा को समर्पित एक अनूठा संस्थान है। समाज के विभिन्न वर्गों के सदस्य इस महाविद्यालय में संचालित शिक्षा का लाभ लेना चाहते हैं, किन्तु वे अनेक विवशताओं के कारण नियमित छात्र के रूप में अध्ययन नहीं कर पाते हैं। अतः क्षेत्र व काल की बाधा को दूर कर जैन तत्त्वज्ञान को आधिकारिक रूप से जन-जन तक पहुँचाने के लिए मुक्त विश्वविद्यालयों की तर्ज पर **श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ** की स्थापना की गई है।

विश्वविद्यालयों में निर्धारित जैनदर्शन विषय सहित शास्त्री की शिक्षा प्राप्त करने हेतु लौकिक शिक्षा के अन्तर्गत संस्कृत और कला संकाय के पारंपरिक विषयों का अध्ययन करना भी अनिवार्य होता है, अतः जिज्ञासु होने पर भी खासकर महिला वर्ग व्यवस्था के अभाव में इसप्रकार के अध्ययन से वंचित रह जाता है। यह मुक्त विद्यापीठ इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए समर्पित और संस्कृत आदि की अनिवार्यता के बिना किसी भी जाति, उम्र, वर्ग के लिए जैनतत्त्व विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु कटिबद्ध है। इस विद्यापीठ द्वारा जैनधर्म के सम्पूर्ण अध्ययन को ध्यान में रखते हुए अनेक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

**वीतराग विज्ञान पाठमाला से समयसार तक का घर बैठे नियमित एवं व्यवस्थित स्वाध्याय का सुनहरा अवसर**

**पाठ्यक्रम -** (1) द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (4 सेमेस्टर)
(2) त्रिवर्षीय सिद्धान्त विशारद परीक्षा (6 सेमेस्टर)

**प्रवेश प्रक्रिया** - 1. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की वेबसाइट **www.ptst.in** को **visit** करें। 2. **Education** पोर्टल में श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के अन्तर्गत **Online Apply** पर क्लिक करके फार्म को पूरा भरकर **Submit** करें। 3. कृपया स्क्रीन पर दिखाई दे रही सूचना को प्रिंट कर लें या फिर अपना फार्म नं. जरूर लिख लेवें। 4. **Pay Now** बटन पर क्लिक कर अपनी फीस को ऑनलाईन जमा करें। 5. कृपया पेमेन्ट सफल होते ही मोबाइल नं. 7742364541 (नीशू शास्त्री) पर कॉल या वॉट्सएप द्वारा सूचना अवश्य देवें।

**नोट :- ऑफ लाइन रजिस्ट्रेशन भी करवा सकते हैं।**

## धन्यवाद!

**(1) सिद्धार्थ एवं काश्वी पहाड़िया को पुत्ररत्न (सिद्धम्)** की प्राप्ति के उपलक्ष्य में मंजू-सुशील पहाड़िया किशनगढ द्वारा 6200/- रुपये संस्था हेतु प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद!

**(2)** जयपुर (राज.) निवासी **चि. विपुल जैन** सुपुत्र श्रीमती संगीता-स्व. योगेन्द्रजी जैन सुपौत्र श्रीमती प्रभा-मोहनलालजी जैन का शुभ विवाह **सौ. विभूति जैन** सुपुत्री श्रीमती कविता-प्रवीणजी जैन के साथ दिनांक 10 फरवरी, 2019 को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में संस्था हेतु 3100/- रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद!

## ऑनलाइन संगोष्ठी संपन्न

अपनी पाठशाला वॉट्सएप ग्रुप पर दिनांक 16 मार्च को रात्रि 8 से 10 बजे तक ऑनलाईन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें आचार्य कुन्दकुन्ददेव कृत ग्रन्थाधिराज समयसार के सामूहिक स्वाध्याय पूर्ण होने पर उसका पुन: रिवीजन किया गया। इसके अन्तर्गत समयसार के 21 विविध विषयों पर सभी साधर्मियों द्वारा आलेख प्रस्तुत किये गये।

गोष्ठी के प्रेरणास्रोत श्री जे.पी. दोशी वाशी, अध्यक्ष श्री अरविन्दकुमारजी भीलवाड़ा थे एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया के मार्गदर्शन में गोष्ठी का सफलतम आयोजन हुआ।

इस अवसर पर प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर उपस्थित थे। साथ ही डॉ. सुदीपकुमारजी दिल्ली भी पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहे एवं उनके आलेख भी प्राप्त हुये। इसके अतिरिक्त डॉ. आरती बेन छिन्दवाड़ा, पुष्पलताजी भोपाल, डॉ. रंजनाजी दिल्ली, नम्रताजी दिल्ली, सीमाजी बांदा, सरिताजी कानपुर, कविताजी मेरठ, अल्काजी मेरठ, इंजी.संदीपजी आदि महानुभावों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये।

गोष्ठी के प्रमुख सहयोगी व संचालक इंजीनियर संदीपजी द्वारा मंगलाचरण किया गया। **- मालती जैन, छिन्दवाड़ा**

## मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन मुक्त विद्यापीठ द्वारा आयोजित की गई सेमेस्टर परीक्षाओं (दिसम्बर-जनवरी) का परिणाम भेज दिया गया है। यदि किसी कारणवश आपको परीक्षा परिणाम प्राप्त नहीं हुआ हो तो जयपुर कार्यालय में फोन करके **संपर्क करें -** 7742364541 (नीशू शास्त्री), 0141-2705581, 2707458 **- प्रबंधक**

## ऋषभदेव जयंती सानन्द संपन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 29 मार्च को भगवान आदिनाथ का जन्म व तप कल्याणक मनाया गया।

प्रात: उपाध्याय वर्ग के सभी छात्रों ने धोती-दुपट्टा पहनकर प्रक्षाल किया तथा ऋषभदेव भगवान की पूजन की। तत्पश्चात् पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री का प्रवचन हुआ। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के साथ भक्तामर स्तोत्र का पाठ किया गया। सभी कार्यक्रम महाविद्यालय के उपप्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पूर्ण हुए।

**प्रतापनगर-जयपुर :** यहाँ ऋषभदेव जयंती की पूर्व संध्या पर दिनांक 28 मार्च को श्री 1008 आदिनाथ जैन सेवा समिति द्वारा भगवान आदिनाथ और उनका दर्शन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के वक्तव्य का लाभ मिला। **- डॉ. भागचंद जैन**

... तथा राग-द्वेष-मोहरूप जो आस्रव हैं, उनका तो नाश करने की चिन्ता नहीं और बाह्य क्रिया अथवा बाह्य निमित्त मिटाने का उपाय रखता है, सो उनके मिटाने से आस्रव नहीं मिटता। **- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 227**

आचार विचार संस्कार

ARHAM PATHSHAALA

महावीर के संदेशों को घर-घर तक पहुँचायेगें

# अर्हं पाठशाला

पण्डित टोडरमल मुक्त विद्यापीठ जयपुर द्वारा संचालित

अब ऑनलाईन
**जैन पाठशाला**
घर-घर तक
**जन-जन तक**

5 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लिये

प्रवेश **प्रारम्भ**

त्रैमासिक पाठ्यक्रम

## रजिस्टर करें

सीमित स्थान

### आप सीखेंगे

- जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों को
- जैन सिद्धांतों का प्रायोगिक ज्ञान
- जीवन जीने की कला
- महापुरूषों का जीवन चरित्र
- नैतिकता
- सदाचरण
- चरित्र-निर्माण
- तनाव मुक्त जीवन

फॉर्म हेतु सम्पर्क करें :- 8058890377

### मुख्य आकर्षण

- ★ विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा कक्षाऐं
- ★ पॉवर पाईण्ट प्रजेन्टेशन
- ★ जूम एप द्वारा ऑनलाईन लाइव वीडियो कक्षाऐं
- ★ 6 भाषाओं में कक्षाऐं (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, कन्नड, तमिल)
- ★ विश्व भर में कक्षाओं का संचालन
- ★ समस्या समाधान सत्र
- ★ प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक सभी जैन पाठ्यकम उपलब्ध

प्रवेश शुल्क **300/-** मात्र

DIRECTOR → एस. पी. भारिल्ल (विश्व प्रसिद्ध वक्ता), डॉ. संजीव गोधा (अन्तरराष्ट्रीय जैन विद्वान)

CO-DIRECTOR → पीयूष शास्त्री (प्रसिद्ध जैन विद्वान)

| Chief Executive | Co-ordinator | In-charge | Executive |
|---|---|---|---|
| प्रतीति पाटील | आकाश शास्त्री 8770845953 | जिनेन्द्र शास्त्री 9571955276 | अर्पित शास्त्री 6350509218 |

E-learning of Mokshmarg

# पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

**प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।**

हास्य मुद्रा, रौद्र मुद्रा, किस तरह जग से भिन्न है,
वैराग्य छवि भी देव की, देह से ना अन्य है।
हो रागमय वैराग्यमय छवि देह का शृंगार है,
छवि से परे यह आत्मा, छवि में खोजना बेकार है।।६१।।

तू लक्ष्य को छवि से हटा, आत्मा पर ध्यान दे,
तू एक शुद्ध अखंड निर्मल है गुणों की खान रे।
जो चाहिये सब कुछ तुझी में, ना अन्य की दरकार है,
पर से न कुछ तू पायेगा, पर की आस ही संसार है।।६२।।

वह आत्मा भगवान का, तेरा नहीं वो ध्येय है
तू ध्येय तेरा ज्ञेय तेरा, तू तू स्वयं श्रद्धेय है।
तू आत्मा परमात्मा है, अविनाश है अविकार है,
है शुद्धता निज लीनता विस्मरण ही तो विकार है।।६३।।

इस तरह छवि भगवान की या आत्मा भगवान का,
पर द्रव्य हैं दोनों अरे, तेरे लिये किस काम का।
पूर्णता की प्राप्ति में बस निज आत्मा ही ध्येय है,
हैं ज्ञेय तो वे अन्य सब, पर निज आत्मा श्रद्धेय है।।६४।।

इस तरह से परमात्मा, साधन न तेरे साध्य में
जब मैं स्वयं आराधना हूँ, हूँ स्वयं आराध्य मैं।
आराधना निज आत्मा की, आराधना का सार है,
ताकना पर की तरफ, मुक्ति पंथ में निस्सार है।।६५।।

अरिहंत इक पर्याय है, अरु सिद्ध भी पर्याय है,
आराधना पर्याय की ना, मोक्ष का ये उपाय है।
भेद बिन गुण-पर्यय सहित, अखंड आतम ध्येय है,
हैं गुण अनंते आत्मा में, गुणभेद पर बस ज्ञेय है।।६६।।

दृष्टि जग से फेरकर, अरिहंत पर स्थाप कर,
स्वरूप अपना स्वयं का, जिनबिम्ब में तू निहारकर।
होकर विमुख तब बिम्ब से, आत्म रूप निहारकर,
हैं एकसे द्रव दृष्टि से इस सत्य को स्वीकार कर।।६७।।

जिनबिम्ब का संज्ञान ले, आत्मा का ध्यान धर,
इसतरह छवि को छोड़कर, छविमान की पहचान कर।
हो जाये स्थित लीन निज में, बन जायें भगवान वो,
इक बार बस भ्रम तोड़कर, तू आप को पहचान तो।।६८।।

इस तरह अपने आप का, स्वरूप का तू विचार कर,
पर द्रव्य से पर्याय से, वो अन्य है स्वीकार कर।
गुण और पर्ययवान को, यह भेद ना स्वीकार है,
इसका जानना तो ज्ञान है, पर देखना व्यवहार है।।६९।।

द्रव्य, गुण पर्याय से ही जानना भगवान को,
ज्ञान है वह आत्म का, है आत्म का श्रद्धान वो।
क्षीण होवे मोह तब, यह सम्यक्त्व है यह सार है,
सम्यक्त्व बिन इस लोक में, और सब निस्सार है।।७०।।

थक हार कर स्वीकारता है, है देह जाने के लिये,
मन्नतें फिर भी मांगता, फिर नर देह पाने के लिये।
मत भूल सुर पशु नरक सम, नर देह भी संसार है,
यदि शिव रमा को ना वरे तो हर देह ही इकसार है।।७१।।

इस देह के सम्बन्धियों में, अपनत्व की की कल्पना,
क्या कोई भी नर आज तक, तेरा बना अपना बना।
हर दिवस तू हर कदम पर, इस तथ्य का अनुभव करे,
क्यों नहीं पर से विमुख हो तब आत्म के दर्शन करे।।७२।।

(क्रमशः)

# कोई किसी का क्यों करे....?

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

प्रस्तुत पद डॉ.भारिल्ल के उस समय के चिंतन के फलस्वरूप लिखे गये हैं, जब वे अत्यंत बीमारी की हालत में थे। प्रस्तुत पदों में स्वयं आत्मा को अन्य सभी परद्रव्यों और पर-आत्माओं से भिन्न बताया गया है। अन्य द्रव्य से भेदविज्ञान की अपेक्षा अन्य जीवात्माओं से भेदविज्ञान पर अधिक बल दिया है। आत्मकल्याण के इच्छुक जीवों को स्व-पर भेदविज्ञान ही करने योग्य है, जिसमें यह रचना लाभप्रद सिद्ध होगी। वैराग्य प्रवृत्ति वाले मुमुक्षु भाईयों के लाभार्थ इसे यहाँ दिया जा रहा है –

( हरिगीत )

कोई किसी का क्या करे, कोई किसी का क्यों करे?
सब द्रव्य अपने परिणमन के जब स्वयं जिम्मेवार हैं।।
जिस देह में आतम रहे, जब वही अपनी ना बने।
तब शेष सब संयोग भी अपने बताओ क्यों बने?।।१।।

एक अपना आतमा ही स्वयं अपनेरूप है।
और सब संयोग तो बस एकदम पररूप हैं।।
संयोग की ही भावना बस भवभ्रमण का हेतु है।
और अपनी भावना ही एक मुक्ति सेतु है।।२।।

संयोग बदलें निरंतर इस दु:खमयी संसार में।
उनको मिलाना असंभव है सुनिश्चित संसार में।।
संयोग होते हैं सहज[१] पर करोड़ों में एक भी।
मिल जाय तो मिल जाय रे अत्यन्त दुर्लभ जानिये।।३।।

संयोग मिलना-बिछुड़ना ना है किसी के हाथ में।
पूरी तरह हैं सुनिश्चित सब ही अनादिकाल से।।
इस सत्य को स्वीकार करना ही सहज पुरुषार्थ है।
सहज में ही सहज रहना एक ही परमार्थ है।।४।।

बस एक सुख का मूल है निज आत्म में अपनापना।
स्वयं को पहिचानना अर स्वयं को निज जानना।।
स्वयं में ही समा जाना स्वयं में ही लीनता।
स्वयं के सर्वांग में ही स्वयं की तल्लीनता।।५।।

यही सच्चा धर्म है अर यही सच्ची साधना।
है आत्मा की साधना अर आत्म की आराधना।।
निज आत्मा में रमणता निज आत्मा का धर्म है।
निज आत्मा के धर्म का इक यही सच्चा मर्म है।।६।।

सद्धर्म का यह मर्म है सब स्वयं में तल्लीन हों।
स्वयं की तल्लीनता से रहित जन भवलीन हों।।
भवलीन संसारी सदा भव में भटकते ही रहें।
निज आतमा के भान बिन सुख को तरसते ही रहें।।७।।

ज्ञानमय आनन्दमय यह अमल निर्मल आतमा।
सद्ज्ञान दर्शन चरणमय सुख-शान्तिमय यह आतमा।।
जो शक्तियों का संग्रहालय गुणों का गोदाम है।
आनन्द का है कंद अर आराधना का धाम है।।८।।

आराधना का धाम है सुख साधना का धाम है।
और अपनी आत्मा का एक ही ध्रुवधाम है।।
एक ही ध्रुवधाम है बस एक ही सुखधाम है।
अध्रुव सभी संयोग बस निज आतमा ध्रुवधाम है।।९।।

ध्रुवधाम में एकत्व रे ध्रुवधाम की आराधना।
ध्रुवधाम में सर्वस्व अर ध्रुवधाम की ही साधना।।
साधना आराधना आराधना अर साधना।
हे भव्यजन ! नित करो अपने आत्म की आराधना।।१०।।

( दोहा )

आतम ही ध्रुवधाम है आतम आतमराम।
आतम आतम में रमें हूँ मैं आतमराम।।११।।

१. मनोनुकूल संयोगों का मिलना असंभव ही है। सहज रूप से कदाचित् मिल भी जावे तो करोड़ों में एकाध ही मिलता है।

## डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 1 से 5 मई | देवलाली | गुरुदेव जयन्ती |
| 19 मई से 5 जून | सूरत | प्रशिक्षण शिविर, |
| 7 जून से 6 जुलाई | विदेश | तत्त्वप्रचारार्थ |
| 2 से 11 अगस्त | जयपुर | महाविद्यालय शिविर |

17 अप्रैल 2019, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

# नि:शुल्क सोनगढ यात्रा संपन्न

**इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 5 अप्रैल तक वीतराग-विज्ञान पाठशाला के छात्र-छात्राओं को सोनगढ (गुज.) की नि:शुल्क यात्रा करवाई गई।

इस यात्रा में युवा फैडरेशन के सदस्यों द्वारा इन्दौर, छिन्दवाड़ा, भोपाल, जबलपुर, उज्जैन, सागर, टीकमगढ सहित सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के 50 नगरों में संचालित श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला के विद्यार्थियों को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की साधनास्थली सोनगढ (गुज.) की नि:शुल्क यात्रा करवाई गई।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, डॉ. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, पण्डित अनुभवजी जैन करेली, पण्डित अमितजी अरिहंत मडावरा, पण्डित सौरभजी शास्त्री गढाकोटा, पण्डित धीरजजी शास्त्री जबेरा, पण्डित समकितजी शास्त्री ज्ञानोदय भोपाल आदि विद्वत्जनों का समागम प्राप्त हुआ, जिन्होंने तीनों समय जैनदर्शन के मुख्य सिद्धांतों के साथ नैतिक शिक्षा व सदाचार का पाठ पढाते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं ज्ञानवर्धक खेल आदि का आयोजन किया।

फैडरेशन के प्रान्तीय अध्यक्ष एवं यात्रा संयोजक श्री विजयजी बड़जात्या ने बताया कि यात्रा का मुख्य उद्देश्य पाठशाला में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों को गुजरात के तीर्थों के दर्शन कराना, सोनगढ में शिक्षण शिविर का आयोजन कर जैनदर्शन के मुख्य सिद्धांतों से अवगत कराना, आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के जीवन-चरित्र एवं उनके द्वारा बताये तत्त्वज्ञान से परिचित कराना था। यात्रा में बच्चों को देश, समाज, परिवार एवं स्वयं के लिये जीवनोपयोगी नैतिक पाठ से परिचित कराया गया एवं 'जीवन के कठिन समय में कैसे अपने आपको बनावें' इस विषय पर विशेष व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

संपूर्ण आयोजन को सफल बनाने में श्री अनन्तभाई हितेनभाई शाह मुम्बई, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ, श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज साधना नगर जिनालय इन्दौर, छिन्दवाड़ा, भोपाल, उज्जैन, जबलपुर युवा फैडरेशन का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें- वेबसाईट - www.vitragvani.com**
**संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**
**Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com**
**ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।**

# राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित

**(1)** श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के स्नातक एवं लाडनूं विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक **डॉ. योगेशजी शास्त्री** को महर्षि बादनारायण व्यास राष्ट्रपति सम्मान-2016 से दिनांक 4 अप्रैल को उपराष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया।

ज्ञातव्य है कि आपके द्वारा 5 पुस्तकें एवं 30 शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं तथा भारत के बाहर बैंकॉक, सिंगापुर, मलेशिया, इंडोनेशिया आदि देशों के विश्वविद्यालयों मे जैन दर्शन विषयक शोध आलेखों की प्रस्तुति दे चुके हैं।

**(2)** श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के स्नातक एवं जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग, सुखाड़िया विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर **डॉ. सुमतकुमारजी शास्त्री** को महर्षि बादनारायण व्यास राष्ट्रपति सम्मान-2017 से दिनांक 4 अप्रैल को उपराष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि आपके द्वारा 5 पुस्तकें एवं 10 शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं

दिनांक 5 अप्रैल को सायंकाल महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा सभी पुरस्कृत विद्वानों को सम्बोधित किया गया।

प्राकृत भाषा एवं जैन विद्या के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु प्रदान किये गये इस पुरस्कार के अन्तर्गत प्रमाण-पत्र, 1 लाख रुपये नकद एवं अंग वस्त्र प्रदानकर सम्मानित किया जाता है।

**प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2019**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com